तृतीय अध्याय

"नदी के द्वीप" में जीवन दर्शन

प्रस्तावना :-

'नदी के द्वीप' उपन्यास साहित्य में एक नया प्रभावशाली साहित्य-प्रकार है। यह उपन्यास अपने काल के अनुरूप विचार रखनेवाला, रोचक और पाठकों तक अपने विचारों को पहुँचाने की ताकद रखनेवाला है। इसी कारण से यह महाकाव्य के समान लोकप्रिय हो रहा है। इस उपन्यास में प्रकट हुए व्यक्तिगत, जीवन दर्शन से इसे महत्त्व प्राप्त होता है। यह स्पष्ट है कि यह उपन्यास एक तात्त्विक लेखन की प्रक्रिया है। चिंतन, कल्पना का बड़प्पन और प्रतिभा की प्रेरणा से दुनिया के श्रेष्ठ उपन्यास प्रभावशाली बने हैं। उपन्यासकार का व्यक्तिगत रूप में अपना एक दृष्टिकोण होता है, अपनी विशिष्टता पर उसको भरोसा होता है। तभी वह उपन्यासकार बनता है और उसकी दृष्टि में बाकी विषय नगण्य होते हैं।

'अज्ञेय' जैसे उपन्यासकार की बौध्दिक चेतना की पकड़ बहुत बड़ी है। उनके बौध्दिक अनुमानों से निर्माण होनेवाले चिंतन को समझने के लिए उनकी रचना प्रक्रिया के कठीन स्तरों से लेकर साहित्य में प्रकट होनेवाले अनुभवों, विशेष प्रकार की कल्पनाओं और धारणाओं तथा विचार सूत्रों को जान लेना चाहिए। उपन्यासकार की बौध्दिक चेतना की पहचान उसकी रचना प्रक्रिया, उसकी आधारभूत सामग्री, उसके अनुभव तथा कल्पना के स्त्रोतों के मार्ग दर्शन के बिना पूर्ण नहीं होती।

आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य के अंतर्गत आनेवाले साहित्य के संघर्ष में अज्ञेय का कथा साहित्य एक तरफ भारतीय जनजीवन, उसका चैतन्य, विषमता आदि का सही रूप में चित्रण करता है। दूसरी ओर शैली शिल्प तथा मानव मन की शाश्वत अनुभूतियों को कला पूर्ण ढंग से प्रकट करता है। 'अज्ञेय' के कथा साहित्य में आज के युग का सही-सही और पूरा चित्र स्पष्ट होता है। शिल्प विधि और भाव विधान की दृष्टि से 'अज्ञेय' का कथा साहित्य आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य का प्रतिनिधि है।

12446
A

कृति का सामान्य पर्यालोचन :-

'नदी के द्वीप' एक श्रेष्ठ प्रेम कथा है। इसमें पीड़ा के द्वारा मुक्ति प्राप्त करने के तात्त्विक विचार को स्पष्ट किया गया है। इस मनोवैज्ञानिक उपन्यास में भुवन एक नायक है। रेखा और गौरा इसकी दो नायिकाएँ हैं। चंद्रमाधव खलनायक है। इस प्रकार इसमें कुल मिलाकर चार ही प्रमुख पात्र हैं। इनके अतिरिक्त और दो पात्र हेमेन्द्र और डॉ. रमेशचन्द्र हैं। रेखा का पहला पति हेमेन्द्र है। और अंतिम पति डॉ. रमेशचंद्र है। चंद्रमाधव हेमेन्द्र का मित्र है। रेखा हेमेन्द्र से अपने को मुक्त कर लेती है। चंद्रमाधव के कारण भुवन से रेखा का परिचय हो जाता है।

'नदी के द्वीप' के प्रारंभ में भुवन एक थोड़ी सी परिचित महिला रेखा के स्पर्श के कारण आनंदित होता है, इसी अवस्था में हम उससे परिचित हो जाते हैं। भुवन रेखा के साथ गाड़ी से प्रवास करता है। बीच में प्रतापगढ़ स्टेशन पर जब रेखा उतरती है, तब वह उसे बिदाई देने के लिए डिब्बे से उतरकर प्लेटफार्म पर खड़ा है। अचानक गाड़ी के चलने पर रेखा भुवन की कुहनी पकड़कर उसे ढकेलती है और कहती है कि आप की गाड़ी जा रही है। भुवन गाडी में बैठ जाता है, परंतु कुहनी पर रेखा के स्पर्श का गहरा अनुभव करता है। जब वह अपनी सिट पर बैठता है तब उसे बिते दिनों की याद आती है।

भुवन कॉस्मिक रश्मियों का अनुसंधानकर्ता वैज्ञानिक है। वह अपने पत्रकार मित्र चन्द्रमाधव के यहाँ लखनऊ आया था। चन्द्रमाधव के घर पर ही रेखा को भुवन देखता है। उसने परिचय के समय लक्ष्य किया था कि, "रेखा के पास रूप भी है और बुध्दि भी है, किन्तु बुध्दि मानो तीव्र संवेदना के साथ गुँथी हुई और रूप एक अदृश्य, अस्पृश्य कवच सा पहने हुए है।"[1]

चन्द्रमाधव के घर में तथा कॉफी-हाऊस में अनेक प्रकार की चर्चाएं होती हैं। वैज्ञानिक भुवन की संवेदनशील नजर से रेखा प्रभावित होती है। रेखा की चमकदार बुध्दि से भुवन पर प्रभाव पड़ता है। भुवन को चन्द्रमाधव से मालूम होता है कि रेखा विवाहिता है। परंतु वह छः वर्ष से अपने पति से अलग रहती है, नौकरी करती है और खुद पर अवलंबित है। लखनऊ में अंतिम दिन तीनों सिनेमा देखते हैं और गोमती के किनारे पर आ जाते हैं। रेखा उन्हें रवीन्द्र संगित सुनाती है। रेखा की भुवन के संबंध में पूछताछ करती है। उसे मालूम हो जाता है कि भुवन अभी अकेला है। लखनऊ से रेखा और भुवन एक ही गाड़ी से यात्रा करते हैं। दोनों अलग-अलग डिब्बों में बैठे थे। यात्रा करते हैं, परंतु हर स्टेशन पर उतरकर भुवन रेखा से बातचित करता है। रेखा प्रतागढ़ स्टेशन पर उतरनेवाली थी। भुवन आगे इलाहाबाद जानेवाला था। प्रतापगढ़ के प्लेटफार्म पर दोनों चर्चा करते हैं और चर्चा के दरमियान कविता में खो जाते हैं। जब गाडी चल पड़ती है तब कुहनी को पकडकर रेखा भुवन को

गाडी में बैठने के लिए कह देती है। भुवन गाडी में बैठ जाता है परंतु रेखा के स्पर्शसे भीतर ही भीतर विचलित हो जाता है।

भुवन और रेखा को बिदाई देने के बाद चन्द्रमाधव उदास होकर सिनेमा जाता है। वहाँ सिनेमा में अपने जीवन के असंतोष में वह खो जाता है। अपनी असफल गृहस्थी और रेखा को अपनाने के प्रयत्न में असफल होने के कारण वह दु:खी है। रेखा को भुवन की ओर आकृष्ट हुई देखकर वह ईर्ष्या से आहत होता है। फिर भी भुवन को मध्यस्थ रखकर वह रेखा के अधिक नजदिक आने के लिए प्रयत्नशील है। इसी प्रयत्न का एक भाग यह है कि वह भुवन के साथ पर्वत जाने का विचार रेखा के सामने रख देता है। चन्द्रमाधव की स्त्री प्राप्ती की इच्छा और भी स्पष्टतासे तब दिखाई देती है जब वह भुवन की शिष्या गौरा से भी संबंध निर्माण करना चाहता है। भुवन के यहाँ गौरा से उसका परिचय हुआ था। वहाँ से विदेश जाने के बाद गौरा से पत्र व्यवहार करता रहता है, इस पत्र व्यवहार में गौरा को दिलचस्पी नहीं रहती। बी.ए. करने के बाद गौरा के सामने विवाह का प्रश्न आता है। वह विवाह से इन्कार करती है और संगित की शिक्षा पाने के लिए मद्रास चली जाती है।

भुवन गौरा के बहुत नजदिक है। जब गौरा के विवाह का प्रश्न आता है तब वह विचलित नहीं होता। वह उसे अपना निर्णय खुद करने के लिए कहता है। भुवन रेखा से प्रभावित तो है परंतु अलग भी है। चन्द्रमाधव के मन में दोनों के प्रति लोभ है। रेखा के जीवन में चन्द्रमाधव की मैत्री होने पर भी भुवन का प्रथम परिचय एक क्रांति है। उसके जीवन के धुँधले वर्षो में वह एक तेज प्रकाश किरण है। भुवन और रेखा, चन्द्रमाधव और रेखा के बीच में पत्र व्यवहार चलता है। चन्द्रमाधव एक ही समय रेखा और गौरा दोनों को पत्र लिखता है और "डबल मेन" का रोल करता है। वह गौरा के पत्र में भुवन के रेखा से प्रभावित होने की बात लिखता है। भुवन और रेखा के संबंधो में दूरी पैदा करने का प्रयत्न करता है। भुवन को रेखा का एक पत्र मिलता है। उस पत्र में चन्द्रमाधव के प्रेम के निवेदन की बात उसने दु:ख के साथ लिखी थी।

भुवन और रेखा को और नजदिक आने का मौका उनकी दिल्ली की भेंट के समय मिलता है। कॉस्मिक किरणों की खोज के बारे में काश्मिर जाने के पहले कुछ दिन के लिए वह दिल्ली में रुकता है। इन दिनों में दोनों हर दिन एक दूसरे से मिलते हैं और अपने को एक दूसरे के सामने प्रकट कर देते हैं। भुवन पहाडों में जानेवाली रेखा को छोडने के लिए जाता है। वह खुद ही रेखा के साथ निकल पड़ता है। नैनिताल के बाद आनेवाले नौकुछिया ताल के डाक बंगले में दोनों रुक जाते हैं। एक रात रेखा निद्राधीन भुवन के पास आती है और कहती है कि "मै तुम्हारी हूँ, भुवन, मुझे लो।"[2] रेखा के इस समर्पण को स्वीकार करने में वह अपने को असमर्थ पाता है। इसका कारण सौंदर्य के प्रति उसका अपना एक दृष्टिकोण था।

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

चन्द्रमाधव को जब रेखा की काश्मिर यात्रा की जानकारी प्राप्त होती है तब वह जल उठता है। इस समय वह खलनायक का पार्ट अदा करता है। वह रेखा से भुवन और गौरा के संबंधों को कुछ बढ़ा चढ़ा कर कह देता है। गौरा और रेखा को एक गंदे उद्देश्य से मिलाता है। भेंट के प्रारंभ में गौरा और रेखा एक दूसरे से कुछ रुष्ट हुई दिखाई देती हैं। परंतु रेखा के व्यवहार से दोनों की दूरी अचानक मिट जाती है। तुलियन से लौटने के बाद रेखा काश्मिर में विधवा एंजेला ग्रीव्ज की सहेली के रुप में काम करती हैं। वह भुवन को अपने गर्भवती होने की बात लिख देती है। तुलियन से वापस आकर भुवन रेखा की चिट्ठी मिलते ही तार देता है, वहाँ जाने के लिए रवाना हो जाता है। ग्रीव्ज के बाग में वह पहुँचता है। उसी रात भुवन रेखा से कहता है, 'रेखा, यह क्या संभव होगा कि- तुम मुझसे विवाह कर लो?'[3] परंतु रेखाने उत्तर दिया कि 'मैने - तुमसे प्यार माँगा था, तुम्हारा भविष्य नहीं माँगा था, न मैं वह लूँगी।'[4]

रेखा का पति हेमेन्द्र जब भारत आता है तब चंद्रमाधव से उसकी मुलाकात होती है। चंद्रमाधव हेमेंद्र की मदद से रेखा को परेशान और पराजित करने की बात सोचता है। हेमेन्द्र की चिट्ठी मिल जाने के बाद रेखा गर्भपात करा लेती है। सातवे दिन भुवन लौट जाता है, तब रेखा बिल्कुल मृत्यु के निकट होती है। भुवन सभी मामले को समझ जाता है। वह उसे अस्पताल में पहुँचा देता है। रेखा वहाँ ठीक हो जाती है परंतु भीतर कहीं टूट जाती है। स्वास्थ्य ठीक होने के बाद वह कलकत्ता स्थित मौसी के पास जाती है। वहाँ से भुवन को पत्र लिखती है, परंतु भुवन उसका कोई उत्तर नहीं देता। रेखा को तलाक मिलता है तो चन्द्रमाधव उसे एक पत्र लिखता है और फिर उसकी सहानुभूति पाने का प्रयत्न करता है। इसी तरह वह गौरा को भी पत्र लिखता है।

इसी समय दूसरा विश्वयुध्द सुरु हो जाता है। जापान इस युध्द में भाग लेता है। भुवन भारत वापस आता है। मसूरी में गौरा के पास रुकता है, रात के समय उसे नींद नहीं आती। गौरा उसके कमरे में आकर देखती है तो भुवन कुछ परेशान है। जैसा कि उस पर कोई भारी बोझ है। वह गौरा के पास उसकी अपनी और रेखा की सारी बातें व्यक्त करता है। इतना ही नहीं रेखा के गर्भपात के लिए खुद जिम्मेदार होने की बात करता है। भुवन का यह दु:ख गौरा को उसके जनदिक और भी लाता है। अब गौरा के पास उसकी खोज पूर्ण हो गई है। भुवन रेडिओ के नये प्रयोग बननेवाले अंदमान केंद्र में आ जाता है। यहाँ भारतीय भूमिपर जापानी बम गिर जाते हैं तो भुवन अपना कर्तव्य निश्चित कर देता है। और सेना में भरती हो जाता है। इस समय रेखा भुवन को एक पत्र लिखती है इस पत्र में वह डॉ. रमेशचन्द्र के साथ अपने विवाह की बात लिखती है और शुभाशीर्वाद माँगती है। भुवन शुभाशीर्वाद को तार से भेजता है। दो महिनों के बाद भुवन बीमार पड़ता है। और फौजी अस्पताल में दाखिल हो जाता है, यह खबर प्राप्त होते ही रेखा भुवन से मिलने के लिए आती है।

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

रेखा कुछ संकेत से भुवन से कह देती है कि भटकता जीवन छोड़कर गौरा से शादी करो। भुवन कुछ बोलता नहीं वहाँ से भुवन को बंगलोर लाया जाता है यह सूचना रेखा से प्राप्त करके गौरा उससे मिलने जाती है।

'नदी के द्वीप' में जीवन की कथा खंडों में कही गई है। इसी उपन्यास में सभी पात्र संपन्न है। -

1. कथा में दर्शन है।
2. महायुध्द है।
3. वैज्ञानिक की खोज है।

लेकिन वे प्रणय के प्रसंग में ही अभिव्यक्त हुए हैं। अज्ञेय की दृष्टि व्यक्तिवादी रही है जो स्वाभाविक है। व्यक्तिवादी आवश्यक रुप में बुध्दिवादी भी होता है। प्रतिभा संपन्न बुध्दिजीवियों की सैक्स पीड़ा के सुख को खंड-खंड में प्रस्तुत करने में प्रस्तुत कृति निश्चित रुप से सफल रही है।

जीवन दृष्टि :

इस उपन्यास की मुख्य विशेषता इसकी व्यक्तिवादी जीवन-दृष्टि है। लेखक ने व्यक्तिवादी दृष्टि के आलोक में ही आधुनिक युग की विविध समस्याओं के समाधान ढूँढे हैं। प्रस्तुत उपन्यास में अभिव्यंजित लेखक की जीवन दृष्टि को समझने के लिए निम्नांकित मुद्‌दों के क्रम से विचार करना उपयुक्त रहेगा -

1. फ्रायडीयन मनोविज्ञान का प्रभाव
2. पीडा या दु:ख के स्वतःवरण की भावना
3. व्यक्तिवाद की प्रतिष्ठा
4. प्रमुख समस्याएँ

1. फ्रायडीयन मनोविज्ञान का प्रभाव :

'नदी के द्वीप' उपन्यास का अध्ययन करते समय सबसे पहले यह ज्ञात होता है कि अज्ञेय के विचारों पर फ्रायड के मानसशास्त्र का प्रभाव पड़ा है। व्यक्ति का अंहकार, डर और लैंगिकता की मूल प्रेरणाओं को अधिक महत्त्व देने के कारण समाज की तुलना में व्यक्ति को अधिक महत्त्व दिया जाता है। फ्रायड के मानसशास्त्र के सिध्दान्तों से व्यक्तिवाद उत्पन्न हुआ है। व्यक्तिवाद याने व्यक्ति के निरपवाद और निरपेक्ष अस्तित्व को मान्यता। उसके "मैं" की प्रतिष्ठा समाज की तुलना में उसके स्वतंत्र अस्तित्व की स्थापना। व्यक्तिवादी विचार में व्यक्ति को समाज का अनुयायी नहीं माना जाता परंतु व्यक्ति पर थोपे गये भले बूरे नियम अनुचित समझे जाते हैं। इतना ही नहीं कि व्यक्ति की प्रगति

करनेवाली इन मूल प्रेरणाओं पर व्यक्तिवादियों को किसी प्रकार का निर्बंध स्वीकार नहीं, कारण निर्बंध तो उन भावों पर उचित होते हैं जो अनिष्ट होते हैं, अकल्याणकारी होते हैं।

उपन्यास का प्रथम प्रकरण इस प्रकार की मनोवैज्ञानिक समय योजना की प्रयुक्ति का निदर्शन है। वर्तमान के जिस बिन्दु के साथ अतीत गुँथता जाता है, वह बिंदु है भुवन का चलती गाड़ी पर सवार होना रेखा के स्पर्श की चुन-चनाहट लिए। गाड़ी प्रतापगढ़ से निकल चुकी है, और भुवन गाड़ी में है। यह वर्तमान का बिंदु है लेकिन उसके पास भूतकाल की स्मृतियाँ भी हैं। भुवन बीते हुए कल का स्मरण करता है। गाडी में भीड़ थी अतः उस दिन यात्रा स्थगित रखने की बात। फिर आज गाड़ी में बैठने की बात। फिर अभी-अभी प्रतापगढ़ से रेखा के बिदाई के क्षण के कथोपकथन की और फिर रेखा के स्पर्श की स्मृति जो अभी तो उस क्षण की ही है, भुवन वर्तमान बिन्दु पर लौट आता है, 'और फिर भुवन ने अपने हाथ और कुहनी की ओर देखा, फिर उसे लगा कि वह चुनचुनाहट अभी गई नहीं है, वह अपनी कुहनी पर अब भी रेखा के स्पर्श का दबाव अनुभव कर सकता है, और वह दबाव ढकेलने का नहीं है, खींचने का है।'[5]

भुवन रेखा के संपर्क-संसर्ग की कामना रखता है पर वह स्वयं उन व्यक्तियों में नहीं है जो कि स्त्रियों के इर्दगिर्द मँडराने में ही अपने पुरुषत्व की शोभा समझते हैं। संभवतः तटस्थ प्रकृति का व्यक्तित्व होने के कारण ही वह रेखा के साथ एक प्रेमी पुरुष का-सा आचरण नहीं करता पर जब संयोगवश वे दोनों एक ही गाडी से यात्रा कर रहे थे तब वह अपने डिब्बे से बार-बार उतरकर रेखा के पास जाता है। भुवन के हृदय में असाधरण व्यक्तित्व की नारी रेखा के प्रति आकर्षण होना स्वाभाविक ही कहा जाएगा। पर भुवन एक कुटिल प्रेमी नहीं है और उसमें हमें सराहनीय सरलता के भी दर्शन होते हैं। अपनी इस स्वाभाविक सरलता के कारण ही वह अपनी शिष्या गौरा का लिखे गये एक पत्र में भी रेखा के प्रति अपना आकर्षण स्वीकार करता है।

भुवन के हृदय में रेखा के प्रति आकर्षण अवश्य उत्पन्न हो गया था पर एकाकी और तटस्थ प्रकृति का होने के कारण वह पहले रेखा को पत्र आदि लिखने में संयम का पालन करता है। भुवन उन पुरुषों में से नहीं है जो नारी के सम्पर्क और संसर्ग के लिए आतुर रहते हैं। सच तो यह है कि स्वयं रेखा ही भुवन का साहचर्य पाने के लिए अग्रसर होती है और उसे चन्द्रमाधव द्वारा की गई बदतमीजी तथा प्रणय की सूचना देने के पश्चात पत्र लिखती है। रेखा का पत्र पाकर भुवन उसकी ओर आकृष्ट होता है और उसका स्वागत करने दिल्ली के रेल्वे स्टेशन पर पहुँचता है। रेखा के आकर्षण का जादू ही भुवन को उसे (रेखा को) नैनीताल के लिए गाड़ी में सवार करने की उत्तेजना में भोजन भी नहीं करने देता। इस प्रकार वह बिना किसी तैयारी के रेखा के साथ जाने के लिए नैनीताल का टिकट ले आता है और वे दोनों नैनीताल में होटल में ठहरने के स्थान पर नौकुछिया ताल के डाक बंगले में

ठहरते हैं तथा आरंभ में वहाँ और बाद में तुलियन झील के समीप उनका प्रेम चरम सीमा पर पहुँच जाता है। यहाँ यह स्मरणीय है कि स्वयं रेखा ही भुवन से लिपटकर और आँखें बन्द कर उसके माथे पर अपना माथा टेक कर रेखा कहती है, 'आर यू रीएल - तुम हो, सचमुच हो, भुवन? ---- मैं तुम्हारी हूँ, भुवन, मुझे लो ----'[6] लेकिन वह उस समय उसका यह अनुरोध स्वीकार नही करता।

भुवम काश्मीर में अपने आप पर नियंत्रण रखने में असमर्थ रहता है और वह शीत में ठिठुरती हुई प्रणय विव्हला रेखा के साथ शारीरिक समागम कर उसकी वर्षों की अतृप्ति को पूर्ण कर उसे यह कहने के योग्य बना है, ' भुवन, जाने से पहले मैं एक बात कहना चाहती हूँ। आइ एम फुलफ़िल्ड। अब अगर मैं मर जाऊँ तो परमात्मा के-प्रकृति के प्रति यह आक्रोश लेकर नहीं जाऊँगी कि मैंने कोई भी फुलफ़िल्मेंट नही जाना -. कृतज्ञ भाव ही लेकर जाऊँगी - परमात्मा के प्रति और-भुवन, तुम्हारे प्रति।'[7] इस प्रकार वह रेखा को माँ भी बना देता है और रेखा उसके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करती है।

हमारी समझ में नहीं आता कि वैज्ञानिक भुवन के कथन से क्या अभिप्राय है और क्या वह यह कहना चाहता है कि वैज्ञानिक यौन भावना से सर्वथा मुक्त होते हैं या होने चाहिए। साथ ही यह कहना भी असंगत है कि भुवन की असली कामुकता व्यक्त हो उठी है क्योंकि वह यदि कामुक होता तो दिल्ली में उसे कई बार ऐसे अवसर प्राप्त हुए थे कि वह रेखा के साथ शारीरिक समागम कर सकता था? इतना ही नहीं, काश्मीर में रेखा के साथ रतिक्रीड़ा करने के पूर्व नैनीताल में नौकुछिया झील के समीप रेखाने ही उसके समक्ष आत्मसमर्पण करना चाहा था पर भुवन ने अपने संयम का ही परिचय दिया था, उसे 'असली कामुक' कहना उसके प्रति और वास्तविकता के प्रति अन्याय करना ही है।

वस्तुतः अपनी पत्नी से चन्द्र के असंतुष्ट होने का मूल कारण यही था कि स्वयं चन्द्रमाधव सनसनी का अत्याधिक दीवाना रहा है और वह हर क्षेत्र में नवीनता का प्रेमी रहा है। वह अपनी पत्नी कौशल्या से भी शीघ्र ही विरक्त हो जाता है और उसे गाँव में ही छोड़कर स्वयं अकेले लखनऊ शहर में रहता है तथा उसकी भोग-लिप्सा बढ़ती चली जाती है। इस प्रकार वह रेखा और गौरा दोनों से ही प्रेम करता है पर उसके इस प्रेम में किसी भी प्रकार की उदात्तता नहीं है बल्कि वासना पूर्ति की प्रबल इच्छा ही विशेष रुप से है। सच तो यह है कि वह कुछ इतना अधिक भोग लिप्सु है कि अपनी वासना पूर्ति के लिए नित्य ही नवीन युवतियों की इच्छा रखता है।

कामातुर या भोगलिप्सु चन्द्रमाधव को भुवन ने दिलफेक आशिक कहा है और यह उचित ही जान पड़ता है, क्योंकि वह रेखा और गौरा दोनों को ही एकदम से अपना हृदय समर्पित कर देता है तथा उन्हें अपनी ओर आकृष्ट करना चाहता है। रेखा के प्रति सहानुभूति के आवरण में रेखा का प्रणय प्राप्त करना चाहता है। वह रेखा को नौकरी दिलाने के लिए दौड़-धूप करता है। वास्तव में उसका उद्देश्य भी यही था कि रेखा उससे बार-बार उपकृत हो, उपकार भाव से द्रवित होकर उसकी इच्छा

पूर्ति करे लेकिन रेखा उसकी ओर आकृष्ट नहीं होती और वह अब प्रणय-याचना करता है पर असफल ही रहता है। दूसरी ओर वह गौरा को भी अपनाना चाहता है पर भुवन की अनन्य प्रेमिका गौरा भी उसे निराश करती है।

अज्ञेय के विचारोंपर फ्रायड के मनोविज्ञान और व्यक्तिवादी विचारों की छाप दिखाई देती है। व्यक्ति के अस्तित्व को स्वीकार करते हुए अज्ञेयजी भी मानवीय जीवन की मुलभूत प्रेरणा-शक्तियों - अहंकार, डर, और लैंगिकता के आगे सिर झुकाते हैं। समाज की तुलना में वे व्यक्ति को अधिक महत्त्व देते हैं, इस कारण से व्यक्ति के "मैं" की प्रतिष्ठा को वे सब से बड़ा मानते हैं। व्यक्ति की निरपवाद सत्ता उनके विचारों में प्रधान रुप धारण कर चुकी है। वह इतनी मात्रा में कि वे पूरे समाज के प्रति उदासीन ओर तटस्थ दिखाई देते हैं। व्यक्ति की सत्ता की तुलना में उनकी दृष्टि में सामाजिक संस्था, परंपरा और पूर्वग्रह इनका कुछ भी महत्त्व नहीं है। इस कारण से सामाजिक नैतिक व्यवस्था को लेकर उनके मन में उपेक्षा का ही भाव है। व्यक्ति की निरपवाद सत्ता के वे पक्षधर हैं। और इस पर किसी प्रकार का बाहरी बन्धन वे मानते नहीं हैं।

अज्ञेय के विचार में प्रेम, वासना और यौन में वासना का स्थान, प्रमुख है, वे वासना को घृणित रुप में नहीं देखते हैं और न यौन संबंधों में नैतिक-अनैतिक की दुहाई देते हैं। वे उत्सुक प्रेम के समर्थक हैं। 'नदी के द्वीप' में भी यौनभाव का ही अधिक्य देखने को मिलता है। भुवन के चरित्र मे अहं की मुख्यता है - जिसकी तुष्टि नारी शरीर की प्राप्ति में होती है। 'नदी के द्वीप' मुख्यतः यौनभाव और अहं दो मनोवृत्तियों पर आधारित है और इस उपन्यास में इनसे उद्भुत कुंठा, जटिलता, क्षुब्धता, पलायन, आत्मप्रवंचना, अराजकता आदि अन्य मनःस्थितियों का विश्लेषण विवेचन है।[8]

2. **पीड़ा या दुःख के स्वतःवरण की भावना :**

'नदी के द्वीप' के कथानक में दुःख या पीड़ा को खुद अपनाने का तात्त्विक चिंतन व्यक्त हुआ है। 'शेखर : एक जीवनी' में जो बिखरा हुआ विचार है वह 'नदी के द्वीप' में आते-आते सुगठित और स्पष्ट हो गया है। इसके कथानक का विकास पात्रों के चारित्रिक विकास पर आधारित नहीं है। इस उपन्यास के सभी पात्र पूरे विकास के साथ प्रवेश करते हैं। 'विस्तृत कैनवैस पर अंकित किये जानेवाले मानव जीवन के एक सीमित अंग का डिटेल है। और यह डिटेल डॉ. भुवन के कुछ प्रणय-प्रसंगो का।'[9] 'नदी के द्वीप' के कथानक में कुछ त्रुटियाँ भी हैं। अलग-अलग अंतरालों के कारण से पूरा उपन्यास एक अनेक कहानियों का संग्रह जैसा लगता है।

'अज्ञेय' जी का विद्रोह करनेवाला व्यक्तिवादी दुःखवाद अपना साथी बन जाता है। उन्होंने 'नदी के द्वीप' में दुःख की इस विचारधारा को प्रस्तुत किया है। 'खुद पसंद करना' का दुःख भुवन और रेखा दोनों में स्पष्ट रुप से दिखाई देता है। इसमें अप्रत्यक्ष रुप से गौरा भी साक्षी है। केवल

चंद्रमाधव ही इस पीड़ा से अलग है कारण वह भोगवाद का प्रतीक बना है। इस दु:खवाद के महत्त्व को वह बढ़ाता है। दु:ख सभी के मन को स्वच्छ करता है' इस विचार की पुष्टि करना उपन्यास का प्रमुख लक्ष्य है। 'नदी के द्वीप' यह एक प्रतीकात्मक नाम है। हर एक व्यक्ति अपने आप में नदी का द्वीप है। पानी की धारा में वह स्थिर तो रहता है परंतु अपना अस्तित्व पूरी तरह अलग रखता है। पानी की धारा और उसके बीच में किसी भी प्रकार प्रेषणीयता के लिए कोई आधार नहीं है। पानी की धारा द्वीप को केवल काटती रहती है और अंत में यह पानी की धारा उसे गहरे दु:ख सागर में मिला देती है। इस तरह 'नदी के द्वीप' में पीड़ा पूजा के विचार को ही प्रधानता दी हुई है। इस उपन्यास में दु:ख को खुद ही पसंद करना इस विचार को ही दिखाया गया है। 'नदी के द्वीप' उपन्यास में खुद अज्ञेयजी ने आरंभ में यह कविता दी है -

'दु:ख सब को माँजता है
और -
चाहे स्वयं सब को मुक्ति देना वह न जाने, किन्तु
जिन को माँजता है
उन्हें वह सीख देता है कि सब को मुक्त रखें।'

उक्त कविता में दो बातें स्पष्ट हो गई हैं कि उपन्यासकार को यह मान्य है कि -

1. दु:ख के कारण व्यक्ति का जीवन अधिक साफ सुथरा होता है।

2. इस तरह का व्यक्ति सभी को बंधनमुक्त रखने के सिध्दान्त में विश्वास करने लगता है। प्रथम विचार के संबंध में यह कहा जा सकता है कि उपन्यासकार ने भुवन के माध्यम से गौरा के नाम लिखे हुए पत्र में रेखा के संबंध में यह कहलवाया है - 'कुछ दिन पहले लखनऊ गया था। चन्द्रमाधव अच्छी तरह है, काफ़ी और शहर का स्कैंडल - राजनैतिक - सामाजिक - उसका मुख्य खाद्य है। और वह इस पर पनप भी रहा है। उसके यहाँ एक और रिमार्केबल व्यक्ति से परिचय हुआ एक श्रीमती रेखा देवी से। तुम उन्हें देखती तो अवश्य प्रभावित होती एक स्वाधीन व्यक्तित्व प्रतिभा के सहज तेज से नहीं, दु:ख की आँच से निखरा है। दु:ख तोड़ता भी है पर जब नहीं तोड़ता या तोड़ पाता, तब व्यक्ति को मुक्त करता है। ऐसा ही कुछ मुझे उन में लगा।'[10] इस कथन के होते हुए भी उपन्यासकार ने अपने उपन्यास में ऐसे किसी भी प्रसंग का वर्णन नही किया कि जिसके कारण यह विश्वास निर्माण किया जा सके कि, यथार्थ में दु:ख की गरमी से रेखा का व्यक्तित्व उज्ज्वल हुआ है। रेखा भुवन के प्रति आकर्षित है। दोनों में परस्पर शारीरिक संबंध भी स्थापित होता है। रेखा गर्भवती हो जाती है। जो शिशु जन्म लेता है उसे जन्मते ही समाप्त कर दिया जाता है। यह दुर्घटना

रेखा और भुवन के बीच दीवार बनकर खड़ी हो जाती है। यहाँ यह भी ध्यातव्य है कि अन्ततोगत्वा दु:ख आनंद देनेवाला है ऐसा मानकर उसे अपनी इच्छानुसार पसंद करनेवाली रेखा न केवल अपने प्रेमी भुवन को गौरा के साथ ब्याह करने के लिए प्रेरणा देती है अपितु भुवन के मार्ग से खुद हट भी जाती है।

'नदी के द्वीप' की नायिका रेखा के समान नायक भुवन भी पीड़ा-पूजा के विचारों का पक्षधर जान पड़ता है। और वह रेखा के शिशु की मृत्यु के लिए खुद अपने को ही जिम्मेदार मानकर अपराध की भावना का दु:ख धारण कर लेता है। अपनी पीड़ा का उल्लेख करते हुए उसने गौरा के नाम लिखे पत्र में लिखा है - '--मुझे लगता है कि मैं खडे-खडे बहुमूल्य वस्तुओं को नष्ट होते, मरते देखा किया हूँ, अकेले देखा किया हूँ और इसलिए साथ ही स्वयं भी मरता रहा हूँ, अगर उस अकेलेपन से निकल सकता, जो देखा है वह कर सकता, तो शायद उस मृत्यु से भी उबर सकता---।'[11] इसी प्रकार उसे अग्नी में मरे बच्चों के चेहरे दिखाई पड़ते हैं। और रात के वक्त आराम के बदले वह अधिकतर इधर-उधर कमरे में घूमता ही रहता है।

भुवन का सहपाठी मित्र चन्द्रमाधव भी भुवन को आत्म पीडित ही मानता है और उसका यही कहना है कि 'भुवन का दु:ख-पूजा का एक सिध्दान्त है। पीडा से दृष्टि मिलती है। इसलिए आत्मपीड़न ही आत्मदर्शन का माध्यम है? क्या दलील है। भुवन अकेला है, घर-गिरस्ती की चिन्ताएँ उसने जानी नहीं, दु:ख की दूर से रोमांटिक कल्पना की है इसीलिए बातें बना सकता है।'[12] इस प्रकार चंन्द्रमाधव भुवन के दु:ख को रोमांटिक कल्पना मात्र ही मानता है और यह बहुत कुछ अंशों में सत्य भी जान पड़ता है। भुवन को अपने जीवन में किसी विशेष अभाव के लिए पीड़ा का अनुभव नहीं होता बल्कि वह स्वेच्छा से दु:ख को अपनाता है। हम देखते हैं कि उसे प्रोफेसर की अच्छी नौकरी प्राप्त होती है और निस्वार्थ वृत्तिवाली प्रेयसी रेखा का प्रेम तथा हिंतचिंतिका करुणामयी गौरा का स्नेह प्राप्त होता है लेकिन वह सौन्दर्य को विनष्ट करने के कल्पित दु:ख की आशंका से ही रोता है।

आत्मपीड़न में आस्था रखनेवाला भुवन आत्मबलिदान में भी आस्था रखता है लेकिन उसकी दृष्टि में यह आत्मबलिदान हमारे जीवन संग्राम में पराजय का परिचयक नहीं होना चाहिए तथा उसके मूल में व्यक्ति द्वारा कटु निर्णय से पलायन या स्वाधीन चिन्तन से भयभीत होने की भावना भी न रहनी चाहिए। साथ ही वह तार्किक दृष्टि से श्रवणकुमार के आत्मबलिदान को भी अनुचित समझता है और गौरा को एक पत्र में यही लिखता है। आत्मबलिदान की बात हमारी पीढ़ी की हर युवती सोचती है। युवती ही क्यों युवक भी। अपनी जिन्दगी लूटाने का हक हर किसी को हैं, और ऐसे मौके भी हो सकते हैं जब अन्याय को चुनौति देने का कोई दूसरा उपाय ही न रहे, यह मैं समझता हूँ।

'नदी के द्वीप' उपन्यास की रेखा का अधिकांश जीवन दु:खपूर्ण या करुणामय ही रहा

है। और यही कारण है कि इस उपन्यास में हमें अनेक प्रसंगों में उसके निराशावादी स्वर की प्रधानता ही दिख पड़ती है। नैराश्यमयी रेखा आत्मपीड़न में रस भी लेती है और उसके जीवन में यदि कभी एक घोर शून्य तथा दुस्सह जड़ता घर कर लेती है तब वह इस जड़ता को भी अपनी उपकारिका ही मानती है। नैराश्यमयी और आत्मपीडिता रेखा वास्तव में क्षणजीवी पात्र ही है और हम देखते हैं कि उसके जीवन में आल्हाद का एक क्षण आता है और वह उस एक क्षण की स्मृति ही हृदय में संजोए हुए ही वह अपना संपूर्ण जीवन हर्षपूर्वक व्यतीत कर देने की विचित्र आत्मक्षमता भी रखती है।

रेखा का संपूर्ण चरित्र व्यक्ति वैचित्र्य का अनूठा उदाहरण है और वह यदि एक ओर अपने सबल व्यक्तित्व, उध्दत, स्वाभिमान तथा क्षणवादी जीवन दृष्टि के कारण नियति के क्रूर प्रहारों को सधैर्य सहन करने की क्षमता और प्रवृत्ति रखती है तो दूसरी ओर वह आत्मपीड़न एवं निराशावादी भावनाओं से भी बच नही पाती।

'नदी के द्वीप' की गौरा भी इसी प्रकार से बहुत दिनों तक दुःख की गरमी में व्याकुल रहती है। जिस भुवन से वह प्यार करती वह भुवन उसे दीर्घकाल तक तड़पाता रखता है। वह खुद रेखा की ओर आकर्षित हो जाता है। केवल ऐसा ही नहीं गौरा को यह मालूम होते हुए भी कि भुवन से रेखा गर्भवती है और भुवन के द्वारा यह सुनकर भी कि 'तुम उसके बारे में बुरा नही सोचोगी गौरा, वह वैसे लोग दुर्लभ होते हैं दुनिया में और-उसने मुझे बहुत प्यार किया था, जितना वह तनिक रुका और फिर कह गया, जितना किसीने नहीं किया। और अब भी करती है।'[13] भुवन से वह आग्रहपूर्वक कहती है कि क्या वह रेखा दीदी से नहीं मिलेंगे। उसके इस कथन से यह स्पष्ट होता है कि भुवन से वह प्रेम करते हुए भी उसे खुद अपने तक मर्यादित न रखकर उसकी प्रेमिका से उसे मिलाने की उदारवादी दृष्टि भी रखती है। इसी तरह वह डायरी के पन्नों पर यह भी लिखती है, 'आग से तुम नही डरोगे, अब किसी चीज से नही डरोगे| आग को मैं सुगंधित कर दूँगी, शिशु, जरुरत होगी तो स्वयं उसमें होम हो जाऊँगी पर तुम नहीं डरोगे, मुझे वचन दो, अपने को नहीं सताओगे - डर से नही, परिताप से नहीं और हाँ, प्यार से भी नही- वह तुम्हें क्लेश दे तो उसे भी हटा देना। तुम देवत्व की साँस हो, देवत्व की शिखा हो जिसे मैं अन्तःकरण में पालूँगी।'[14]

स्पष्टतः 'नदी के द्वीप' उपन्यास के तीनों मुख्य पात्र - रेखा, भुवन और गौरा हमें दुःख की पूजा के विचार की उपासना करते दिखाई देते हैं। उनकी चारित्रिक विशेषताओं को देखने से यह स्पष्ट हो जाता है कि उन्हें अपनी इच्छा से दुःख को पसंद करना अच्छा लगता है और दुःख से ही उनका व्यक्तित्व उजागर होता दिखाई पड़ता है।

3. व्यक्तिवाद की प्रतिष्ठा :

आजादी के बाद लिखे गये उपन्यासों में मानव जीवन की व्यक्तिगत मनोवृत्ति का स्वर स्पष्ट हुआ है। यह व्यक्तिगत मनोवृत्ति का स्वर व्यक्ति के जीवन के हालचाल, मन के द्वन्द्व,

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

बौध्दिक चर्चा और विचारों से परिपूर्ण है। व्यक्तिगत विचारों को महत्त्व देनेवाले उपन्यासों के पात्र पढे-लिखे, आत्मकेंद्रित, आत्माभिमानी और विचार करनेवाले प्राणी होते हैं। 'जीवन, जगत्, मृत्यु, ईश्वर, प्रकृति, समाज, नारी-पुरुष, विवाह, प्रेम और सैक्स के संबंध में उनकी धारणाएँ उनके निजी-जीवनगत यथार्थ अनुभवों से प्रसूत होती हैं। उन्हीं दृष्टिकोणों के औचित्य व अनौचित्य को दृष्टिगत रखकर वे जीवन पथ पर अग्रसर होते हैं, सफल हो अथवा विफल। व्यक्तिवादी उपन्यासों में वर्ग और समाज के विशाल चित्रण की ओर नहीं वरन् कुछ गिने-चुने व्यक्तियों के जीवन की गहनता पर प्रकाश डालने की ओर उपन्यासकारों की दृष्टि रहती है।'[15]

व्यक्ति को महत्त्व देनेवाले उपन्यासों में जीवन और जगत् की समस्याओं के उत्तर तथा उनके उपयोग का मूल्य जानना व्यक्ति की कल्याणभावना से हुआ है। व्यक्ति को महत्त्व देनेवाले उपन्यास, समाज को महत्त्व देनेवाले उपन्यास और मन का विवरण-विश्लेषण करनेवाले उपन्यास दोनों को एक साथ जोड़ देते हैं।

प्रगतिवादी समीक्षक 'नदी के द्वीप' की कड़ी आलोचना करते हैं। इसकी वजह शायद यह है कि 'अज्ञेय' व्यक्तिवादी काव्य प्रवाह के मुख्य कवि है। 'अज्ञेय' ने प्रेमचंद, यशपाल, रांगेय राघव आदि को आदर्श मानकर अपने उपन्यास नहीं लिखे हैं। कुछ समीक्षक विषम वस्तु के आधार पर उपन्यास की कडी आलोचना करते हैं और शैली शिल्प की प्रशंसा करते हैं। 'अज्ञेय' के उपन्यास परंपरागत् उपन्यासों के मार्ग से नया मार्ग निर्माण करते हैं, इस कारण से 'अज्ञेय' के उपन्यासों में अपनी मान्यताओं, अपने विचारों और विश्वासोंका रुप जो समीक्षक देखना चाहते हैं उन्हें निराश होना पड़ेगा। 'अज्ञेय' का कविरुप उनके उपन्यासों में जगह-जगह पर दिखाई देता है। उनके मतानुसार 'इस स्वीकार में यह ज्ञान भी है कि परिस्थितियों से भी और मन से भी मेरा अधिकांश जीवन अकेले में बीता है। अकेले में कविता फिर भी हो सकती है लेकिन उपन्यास के लिए ऐसा जीवन ना काफी है। यों कह लीजिए कि वैसा रहनेवाले के लिए एक खास ढंग के उपन्यास लिखना ही संभव है।'[16]

'नदी के द्वीप' उपन्यास में दो मुख्य पात्र हैं। ये दोनों पात्र व्यक्तिवाद और स्वच्छन्दतावाद के पक्षधर हैं। रेखा आर्थिक दृष्टि से स्वावलंबी तथा पढ़ी लिखी स्त्री है। वह अपने जीवन के निर्णय अपनी इच्छा से करती है। कोई भी बाहरी सत्ता उसके निर्णय को प्रभावित नहीं करती जैसे गर्भपात कराने और डॉ. रमेशचंद्र से विवाह करने का निर्णय वह खुद करती है।

मानव के व्यक्तिगत जीवन के अनेक पहलुओं, मान्यताओं, दृष्टिकोणों का प्रतिपादन करनेवाले उपन्यास व्यक्तिवादी कहलाये जाते हैं। व्यक्तिवादी उपन्यासकार पात्रों की एक मानसिक अवस्था पर ही ध्यान देते हैं। और अन्य अवस्थाओं की उपेक्षा करते हैं। आज के बौध्दिक युग में मनुष्य को बहुत सोच विचार से समझने की आवश्यकता है। इस कारण से व्यक्तिवादी उपन्यासकार बडे विचारों को

छोडकर संकुचित विचार की ओर जाते हैं।

'नदी के द्वीप' में व्यक्तिगत रुप में चार-पाँच संवेदनाओंका अध्ययन हुआ है इस बात को खुद अज्ञेयजी भी स्वीकार करते हैं। पुरुष द्वारा नारी अधीन होकर भी नारी के गर्व को नष्ट करना। 'नदी के द्वीप' के विभिन्न पात्रों की दृष्टि से देखा गया भुवन, चन्द्रमाधव, गौरा और रेखा है। भुवन गंभीर, विचारशील तथा व्यक्तिवादी क्यों हैं, रेखा भावुक, एकांतप्रिय तथा व्यक्तिवादी क्यों है, चंन्द्रमाधव विषयलोलुप, फँसानेवाला और आस्थाहीन क्यों है तथा गौरा विशेष मुक्त, नाजुक, धैर्यशील और संयमी क्यों है? आदि प्रश्नों को उठाना ऐसा है कि हेमलेट ओथेलो क्यों नहीं है? अथवा शेखर अमरकांत क्यो नहीं है। 'नदी के द्वीप' उपन्यास में पात्र अपने दृष्टिकोण से जीवन को देखता है और अपने मत से इसे परखता है। प्रेम तथा विवाह के बारे में हर व्यक्ति को स्वतंत्र रुप से सोचने का अधिकार मिला हुआ है। वह अपनी दृष्टि से इसकी हर मान्यता पर प्रश्न चिन्ह लगाता है और प्रश्नचिन्ह लगाने में आधुनिकता की प्रक्रिया गतिशील है।'[17]

रेखा और गौरा के अभिमान को तोड़ना ही भुवन का जीवन लक्ष्य मानना उचित भी न जान पड़ता है। परंतु यह स्पष्ट रुप से सत्य है कि उपन्यासकार का मूलउद्देश्य मानव को स्वतंत्र बड़प्पन देना ही है। उपन्यास का नाम इस बात का ही परिचायक है और उसके रेखा, भुवन वैसे ही गौरा नाम के तीनों पात्र अपने आप को जीवन प्रवाह में द्वीप की तरह उपमा योग्य बनाकर व्यक्तिवाद का ही समर्थन करते हैं। रेखा कहती है, 'मैं तो समझती हूँ, हम अधिक से अधिक इस प्रवाह में छोटे-छोटे द्वीप हैं उस प्रवाह से घिरे हुए भी, उससे कटे हुए भी, भूमि से बँधे और स्थिर भी, पर प्रवाह में सर्वदा असहाय भी - न जाने कब प्रवाह की एक स्वैरिणी लहर आकर मिटा दे, वहाँ ले जाय, फिर चाहे द्वीप का फूल पत्ते का आच्छादन कितना ही सुन्दर क्यों न रहा हो।'[18] इस प्रकार उपन्यास के अंत में भी गौरा भी रेखा के नाम लिखे पत्र में इसी विचार की पुष्टि करती हुई कहती है, 'रेखा दीदी, मेरे पास दर्शन अभी कुछ नहीं है, एक आस्था है, और कुछ श्रध्दा, और सीखने की - सहने की, और यत्किंचित् दे सकने की लगन है, इनके और आपके स्नेह के सहारे मुझे लगता है कि मैं चारों ओर बहते अजस्र प्रवाह में खड़ी रह सकूँगी। एक नगण्य व्यक्ति-पुंज, अस्तित्व का एक छोटा सा द्वीप, लेकिन जो फूलना चाहता है, फूल झरकर नदी के बहते जल को सुवासित कर देना चाहता है - फिर नदी चाहे जो करे, उन फूलों की गंध ही पहुँच जाय दूर, दूर, दूर।'[19]

भुवन व्यक्तिवादी पात्र ही है पर वह अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व की रक्षा करते हुए भी समाष्टिगत जीवन से एक होना चाहता है और रेखा के प्रति अपनी समाष्टिवादी भावना प्रकट करते हुए कहता है, 'आप शायद् ठीक कहती है। लेकिन मानवता न सही, जीवन की बात जब मैं कहता हूँ, तब अपने जीवन से बड़े एक संयुक्त, व्यापक, समाष्टिगत जीवन की बात सोचता हूँ - उसी से एक होना

चाहता हूँ - अगर वह बहुत बड़ा प्रवाह है, तो उस की धारा की बाँहों से घेर लेना चाहता हूँ - या वह छोटे मुँह बडी बात लगे तो कहूँ कि उस पर एक पुल बाँधना चाहता हूँ चाहे क्षण-भर के लिए।'[20] रेखा व्यक्तिवाद में दृढ आस्था रखती है और वह किसी भी मूल्य पर अपनी स्वतंत्र इकाई नही खोना चाहती। रेखा प्रत्येक नर-नारी के स्वतंत्र स्वच्छंद व्यक्तित्व में आस्था रखती है और उसकी यही धारणा है कि प्रत्येक व्यक्ति का जीवन मार्ग भी उसके व्यक्तित्व के अनुसार भिन्न-भिन्न हो सकता है तथा वह किसी बँधी हुई जीवन रीति या परंपरा का अंधानुसरण करने के स्थान पर नवीन लोक या नये मार्ग की खोज कर सकता है।

रेखा किसी सभ्यता की -हासोन्मुखता का मूल लक्षण ही यह मानती है कि उसमें नर-नारियों के स्वतंत्र व्यक्तित्व की अवहेलना की जाती है और परंपरागत मान्यताओं के बोझ से व्यक्ति के स्वतंत्र व्यक्तित्व को दबा दिया जाता है। यही कारण है कि वह अपने चरित्र के भी दो पहलू मानती है -

1. चरित्रवान, प्रकृत एवम् मुक्त -
2. सभ्य तथा चरित्रहीन -

'नदी के द्वीप' में 'अज्ञेय' जीने रेखा, भुवन और गौरा की मनोभावना स्पष्ट की है और कहा है कि लोगों में उनके व्यक्तित्व द्वीप नष्ट हो जाय, विचार प्रवाह में बह जाय परंतु वे अपनी शक्ति के अनुसार अपना स्वतंत्र अस्तित्व बनाकर रखने का प्रयत्न करेंगे। यहाँ यह ध्यान देने योग्य है कि ये तीनों पात्र अपने-अपने कथनों और कर्मों की दृष्टि से व्यक्तित्ववादी ही दिखाई देते हैं। उनके चरित्रों से व्यक्तिवाद, व्यक्ति की विचित्रता और स्वतंत्र निर्णय पर स्थिर रहने की क्षमता आदि गुण स्पष्टतः दिखाई देते हैं। अगर इस विचार की पुष्टि करनी हो तो हम यह कह सकते हैं कि 'नदी के द्वीप' की नायिका रेखा में व्यक्तिवाद इतना बढ़ गया है कि वह प्रेम और विवाह के महत्त्वपूर्ण मामलों में समाज की दखलअंदजी को जरा भी सहना नहीं चाहती। इसी कारण वह भुवन के अवैध शिशु की माँ बन जाती है। वह भुवन के विवाह प्रस्ताव को तो मानती नहीं। लेकिन उसके साथ ही वह (रेखा) भुवन के भविष्य को अकण्टक बनाने के लिए गर्भपात भी करा लेती है। इसके बारे में उसने भुवन को एक पत्र भी लिखा है। उसमें उसकी व्यक्तिवादिता स्पष्टतः दिखाई पड़ती है। वह गौरा के भुवन से विवाह के मार्ग को अकण्टक बनाने के लिए डा. रमेशचन्द्र से विवाह कर लेती है परंतु भुवन को भुल भी नहीं जाती।

रेखा के द्वारा ही नहीं, अज्ञेय ने व्यक्ति की इस महत्ता और व्यक्तिवादी दृष्टि को भुवन के द्वारा भी प्रतिष्ठित किया है। रेखा को अपने व्यक्ति से, अपनी वैयक्तिकता से मोह है। वह अपने लिए किसी का हस्तक्षेप नहीं चाहती। इसलिए स्वयं भी किसी के जीवन में हस्तक्षेप नहीं करती।

भुवन क्या चाहता है, उसके मन को वह नहीं जानती लेकिन गौरा के रास्ते पर वह आड़े नहीं आती क्योंकि वह भी तो एक द्वीप है और उसकी अपनी वैयक्तिकता है। भुवन दूसरों के व्यक्तित्व का आदर करता है। इसी कारण वह रेखा की इच्छा के विरूध्द उससे विवाह करने पर बल नहीं देता है। इसी प्रकार रेखा का डॉ. रमेशचन्द्र से विवाह करने का इरादा सुनकर वह उस पर क्रोधित नहीं होता है। इसके विरूध्द वह रेखा को शुभ संदेश और उपहार भी भेजता है। तथैव अपनी शिष्या एवं प्रेमिका गौरा को स्वतंत्र निर्णय लेने के लिए बाध्य करता है। खुद गौरा में भी हम इस व्यक्तिवाद की झलक देख सकते हैं। और उसकी भी इच्छा नहीं कि अगर उसका प्रेमी भुवन न चाहता हो तो वह उससे विवाह या प्रेम को और रेखा को स्वीकार करे। उपन्यासकार अज्ञेयजी ने "नदी के द्वीप" में भुवन, रेखा और गौरा इन तीन पात्रों द्वारा वाचा-मन-कर्म से व्यक्तिवादी जीवन विचार को स्थापित करने का प्रयत्न किया है। यह भी हो सकता है कि अज्ञेयजी "नदी के द्वीप" में इस व्यक्तिवाद की स्थापना पूरी तरह यशस्वी न रहे हों परंतु व्यक्तिवाद में उनका पहले से ही दृढ प्रेम रहा है।

और हम देखते हैं कि व्यक्तिनिष्ठा के कारण रेखा को आत्मपीड़ा के दौर से गुजरना पड़ता है। यह आत्म-पीड़ा की प्रक्रिया व्यक्ति, समाज और साहित्य के लिए कौनसी रचनात्मक दृष्टि लेकर आती है, इसके विवेचन-विश्लेषण के लिए अन्यत्र स्थान खोजना होगा।

रेखा के व्यक्तित्व की यह सेक्स लिप्तता उसके व्यक्तिवादी और क्षणवादी व्यक्तित्व का सुनिश्चित प्रमाण है। हम जानते हैं कि व्यक्तिवादी व्यक्ति का संपूर्ण स्नेह और लगाव व्यक्ति के प्रति नहीं वरन् अहं के जीवित संपर्क से ही होता है। व्यक्तिवादी दृष्टि का विकास उस सामाजिक व्यवस्था की प्रतिक्रिया में हुआ है जिसमें समाज के सम्मुख व्यक्ति के महत्व को स्वीकार नहीं किया जाता। हिन्दी में व्यक्तिवाद और क्षणवाद साथ-साथ चले हैं। व्यक्तिवादी को जीवित रहने के लिए क्षणवादी होना पड़ता है। अज्ञेय का बुध्दिवाद, व्यक्तिवाद और क्षणवाद रेखा के अतिरिक्त भुवन के चरित्र द्वारा भी व्यक्त हुआ है।

4. प्रमुख समस्याएँ :

व्यक्तिवादी जीवन विचार पर जबरदस्त प्रेम करते हुए भी अज्ञेयजी ने "नदी के द्वीप" में समाज के मध्यवर्ग की समस्याओं का विस्तारपूर्वक चित्रण किया है। उन्होंने अपने उपन्यास को समाज के एक अंग का चित्रण माना है।

अज्ञेयजी ने "नदी के द्वीप" को पात्रों की वैयक्तिक समस्याओं तक ही मर्यादित रखा है। भुवन, रेखा, गौरा, चन्द्रमाधव, कौसल्या, हेमेन्द्र आदि इस उपन्यास के सभी पात्र आर्थिक समस्याओं से मुक्त हैं, और उनके जीवन में केवल विवाह और प्रेम की समस्या ही मुख्य है।

भुवन के जीवन में प्रेम और विवाह की समस्याएँ नहीं हैं, इसके विरुध्द इन दोनों के संघर्ष से उत्पन्न अन्तर्-संघर्ष की ही समस्या है। रेखा और भुवन दोनों भी व्यक्तिगत समस्याओं के लिए समाज की मान्यता नहीं चाहते। वे दोनों समाज की अपेक्षा व्यक्ति को अधिक महत्त्व देते हैं, बड़ा मानते हैं। सत्य तो यह कि दोनों का प्रेम यह कोई समस्या नहीं है, वह वैयक्तिक जीवन की तुष्टि ओर तृप्ति का ही अपना रुप है। इसी तरह गौरा के माध्यम से मध्यवर्ग की प्रेम समस्या को हमारे सामने रखा गया है। गौरा हमारे सामने भुवन की श्रेष्ठ प्रेमिका के रुप में आती है और अंत तक भुवन के प्रति पूरा स्नेह अर्पित करती रहती है। भुवन और रेखा के प्रेमपूर्ण प्रसंग को पूरी तरह जानकर भी वह भुवन को जरा भी दोषी नहीं मानती और उसका जीवन साथी बनने के लिए उत्सुक दिखाई देती है।

चन्द्रमाधव तथा उसकी पत्नी कौसल्या के माध्यम से मध्यवर्ग के दाम्पत्य जीवन की लाचारी और घुटन दर्शाया गया है। उपन्यासकारने पुरुष की स्त्रियों के प्रति अनुदार दृष्टि और स्त्रीका समर्पण भाव दिखाया है। वास्तव में चन्द्रमाधव का चित्रण मध्यवर्गीय असंगतियों का चित्रण है। चन्द्रमाधव बौध्दिक दृष्टिकोण से समझता है कि सामाजिक संबंधों को झूठ मानना निरर्थक है। रोमांसपूर्ण आदर्शों की पुष्टि करनेवाला वह सामाजिक परिस्थितियों से परिचित है परंतु चरित्र संघर्ष में बंधा हुआ है। इसलिए विवाहित चन्द्रमाधव वैवाहिक जीवन की जिम्मेदारियों के प्रति अनुदार ही रहा है। उसके जीवन में स्वच्छंदता, काम की उत्तेजना, दबी भाव-भावनाएँ तथा घुटन ही रहने के कारण वह अपनी सरल पत्नी से समाधानी नहीं रहता। इस तरह वह सिर्फ मध्यवर्ग की कौटुंबिक जीवन की समस्याओं को ही प्रस्तुत नहीं करता परंतु मध्यवर्ग की दिखावे की भावना और अत्याधुनिक जीवन की आवश्यकताओं से निर्मित अनेक विषमतओं को दिखाता है। इसी प्रकार उसकी पत्नी कौसल्या के द्वारा मध्यवर्ग की नारी की घुटन और लाचारी भी स्पष्ट हुई हैं। उसे मालूम है कि उसका पति चंद्रमाधव उससे प्यार नहीं करता और सिर्फ वासनापूर्ति का साधन ही समझता है तो भी वह उस के साथ समझौता करती है। इस तरह कौसल्या के द्वारा "नदी के द्वीप" में मध्यवर्ग की नारी की घुटन और दु:ख को शक्तिशाली और मौन प्रकटीकरण प्राप्त हुआ है।

अंत में हम अनुमानतः कह सकते हैं कि "नदी के द्वीप" में मध्यवर्ग की सिर्फ प्रेम और वैवाहिक समस्याएँ ही मुख्य रुप से प्रकट हुइ हैं। इन्ही दो समस्याओं के साथ मानसिक संघर्ष, दबी हुई भाव-भावनाएँ, घुटन और निरुपाय आदि भी चित्रित हुए हैं।

निष्कर्ष :

उद्देश्य और जीवन-विचार की दृष्टि से "नदी के द्वीप" पर विचार करने के बाद हम इस निष्कर्ष पर आते हैं कि इस उपन्यास में एक ओर तो व्यक्तिवादी जीवन विचार की स्थापना करते हुए इस हकिकत पर बल दिया गया है कि समाज अपने निरोगी विकास के लिए हर व्यक्ति को मुक्त विकास के लिए अवसर दें।

दूसरी ओर उपन्यासकार दुःख के सहारे व्यक्तित्व में साफ-सुथरापन आने की ओर भी इशारा करता है।

"नदी के द्वीप" में व्यक्तिवादी जीवन विचार का अर्थ व्यक्ति सिर्फ अपने बारे में ही सोचता है। अपने को छोड़कर बाकी दुनिया की ओर ध्यान ही नहीं देता। उसके मनमें केवल अपना स्वार्थ रहता है। परोपकार, त्याग आदि कल्पना ही वह नहीं कर सकता।

व्यक्तिवाद के विरोध का प्रमुख आधार चन्द्रमाधव है, वह शक्तिशाली नहीं बन पड़ा। उसी के माध्यम से उचित रुप में विरोधी दलीलें भी नहीं दी जा सकी, इससे व्यक्तिवादी पक्ष के फैलाव में त्रुटी रह गई है। पात्र कौन से मत को मानते हैं, यह मुख्य नहीं, परंतु वे क्या बने हैं, उन्हें कौनसी प्राप्ति होती है यह मुख्य बात है।

इस दृष्टि से "नदी के द्वीप" के व्यक्तिवादी विचार धारा का परिचय करानेवाले रुपक को सबसे अधिक पुनः पुन्हा ठुकरानेवाली रेखा की प्राप्ति उसके अपने शब्दों में बहुत करुणाजनक बन पड़ी है। रेखा और भुवन के रुप में स्त्री-पुरुष के यौन मिलन का कलात्मक प्रकटीकरण आकर्षक है। उसे जैसा गौरवान्वित करने का प्रयत्न किया गया है।

ooo

संदर्भ :

1. नदी के द्वीप - "अज्ञेय", प्र. सं. 1984, पृ. 10
2. वही, पृ. 176
3. वही. पृ. 276
4. वही, पृ. 277
5. वही, पृ. 6
6. वही, पृ. 269
7. वही, पृ. 207
8. अज्ञेय : का कथा साहित्य - ओम प्रभाकर, पृ. 43
9. वही, पृ. 53
10. नदी के द्वीप - "अज्ञेय", प्र.सं. 1984, पृ. 114
11. वही, पृ. 359
12. वही, पृ. 46
13. वही, पृ. 387
14. वही, पृ. 401
15. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास साहित्य में जीवन दर्शन - डॉ. सुमित्रा त्यागी, प्र.सं., 1978, पृ. 175
16. हिन्दी के सात उपन्यास - डॉ. सरजूप्रसाद मिश्र, प्र.सं. 1977 पृ. 90 पर उद्धृत
17. अज्ञेय का उपन्यास साहित्य - दुर्गाशंकर मिश्र, सं. 1976, पृ. 253
18. नदी के द्वीप - "अज्ञेय", प्र.सं., 1984, पृ. 19
19. वही, पृ. 438
20. वही, पृ. 18

ooo

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR